

आजाद सिपाही

कलम कलम बढ़ाये जा

जया बच्चन के
सभापति धनखड़
को उंगली दिखाने
पर मचा बवाल

स्व. डा. जनार्दन पाण्डेय की चतुर्थ पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित



मंगलवार, 14 फरवरी 2023

अखण्ड हरि कीर्तन
प्रातः 10:30 बजे से

बुधवार, 15 फरवरी 2023

प्रसाद

दोपहर 12:30 बजे से
आपके आगमन तक

सांस्कृतिक

कार्यक्रम

दोपहर 2:00 बजे से

समस्त कोयलांचलवासी
सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित कलाकार



विष्णु ओझा



विशाल गगन



छोटू बिहारी



दीपिका ओझा



विशाल ओझा



भोला पाण्डेय



अनन्या प्रकाश



रमेश पाण्डेय (पौत्र)

भारतीय जनता पार्टी

सैल्यूट तिरंगा

राष्ट्रीय सचिव

स्थान : कार्यालय, कतरास मोड़, झरिया (धनबाद)

13 फरवरी, 2023
फाल्गुन, कृष्ण पाष्ठ, अट्टनी
संवत् 2079
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची

सोमवार, वर्ष 08, अंक 116

तुर्की-सीरिया में 33 हजार से ज्यादा नौंदें संख्या 50 हजार से ऊपर जा सकती है

आजाद सिपाही

कलम कलम बढ़ाये जा



FLORENCE
Group of Institutions
(A Unit of: Haji Abdur Razzaque Educational Society)
Irba, Ranchi-835219 (Jharkhand)

Admission OPEN 2023-24

NURSING ANA GYM PARAMEDICAL D-PHARM

POST-BASIC B.Sc. B.Sc. X-RAY OPHTHALMIC BASIC B.Sc. M.Sc. ASST. OT ASSISTANT Separate Hostel For Boys And Girls M: 9031231082, 7905999411, 6205145470 E-mail : fslrba@gmail.com Website : www.florenceinstiba.com

आलोक दुबे समेत चार नेता छह वर्षों के लिए कांग्रेस पार्टी से निलंबित

रांची (आजाद सिपाही)। झारखण्ड प्रेस कांग्रेस अनुशासन समिति के अनुसासनात्मक कार्यालय की अनुसंधान पर सम्बन्धित प्रदेश कांग्रेस के चार नेताओं को पार्टी से निलंबित कर दिया गया है। इनमें आलोक कुमार दुबे, लाल किंशु शाहदेव, डॉ रमेश बैस को तलावा रप्तार से अगले छह वर्षों के लिए झारखण्ड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के द्वारा पार्टी से निलंबित कर दिया गया है। इस आशय का कार्यालय आदेश जारी कर दिया गया है। यह जानकारी झारखण्ड प्रेस कांग्रेस कमिटी के प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने दी।

असम में महसूस किये गये भूकंप के तेज झटके

असम (आजाद सिपाही)। असम के कुछ हिस्सों में रिवरवर को चार तीव्रता का भूकंप का झटका महसूस किया गया। आधिकारिक बुलेटिन के मुताबिक तकलीफ भूकंप से किसी के हताहत होने या संपत्ति के नुकसान की जानकारी नहीं मिली है।

झारखण्ड समेत 13 राज्यों-केंद्र शासित प्रदेशों के राज्यपाल बदले सीपी राधाकृष्णन झारखण्ड के 11वें राज्यपाल, रमेश बैस महाराष्ट्र गये

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राष्ट्रपति द्वापदी मुर्मू ने झारखण्ड समेत 13 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के राज्यपालों को बदल दिया है। इसकी अधिसूचना रिवरवर को जारी की गयी। इसके अनुसार अब झारखण्ड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन होंगे। वह झारखण्ड के 11वें राज्यपाल होंगे। वहीं रमेश बैस को 10वें राज्यपाल थे। वह छत्तीसगढ़ से सात वर्ष सांसद भी रहे हैं। इसके अतिरिक्त रमेश बैस केंद्र सरकार में मंत्री भी रह चुके हैं। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में वह पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री रह चुके हैं। वह साल 2021 के जुलाई महीने में झारखण्ड के राज्यपाल बनाया गया थे। फिर को तलावा रप्तार से अगले छह वर्षों के लिए झारखण्ड प्रदेश को राज्यपाल बने और अब महाराष्ट्र के नये राज्यपाल होंगे।

कोयंबद्दु से लोकसभा सांसद रहे चुके हैं सीपी राधाकृष्णन : झारखण्ड के नये राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन पूर्व राज्यपाल रमेश बैस की तरह ही लोकसभा सांसद भी रह चुके हैं। व्याख्यान कोयंबद्दु लोकसभा क्षेत्र से दो बार सांसद रह चुके हैं। इनकी नियन्त्रित भाजपा के बड़े नेताओं में होती रही है। इसके अतिरिक्त भाजपा ने इन्हें तमिलनाडु में पार्टी का अध्यक्ष भी बनाया था। वर्षमान में वह भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं। भाजपा ने उन्हें केरल भाजपा की अध्यक्ष भी रह चुके हैं। व्याख्यान कोयंबद्दु के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इससे पूर्व ताजिकिस्तान में 44 मजदूरों के फंसें का मामला सामने आया था।

ये सभी मजदूर चार महीने पूर्व बिष्णुगढ़ प्रखंड को खरना पंचायत के पंचम महतों के माध्यम से द्रांस्प्रिंग लाइन के लिए काम करने ताजिकिस्तान गये थे, जहाँ पिछले चार महीने से उन्हें वेतन



सीएम हेमंत सोरेन ने किया स्वागत

इस बीच मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने राज्य के नये राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन का स्वागत और अभिनंदन किया है। मुख्यमंत्री ने रिवरवर को दीपी कर नये राज्यपाल का स्वागत किया। निवासनाल राज्यपाल स्वेश बैस के बारे में हेमंत सोरेन ने लिया, महाराष्ट्र राज्य का राज्यपाल नियुक्त किये जाने पर रमेश बैस जी को हालिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

झारखण्ड के अब तक के राज्यपाल

| | |
|------------------|---|
| प्रभात कुमार | 15 नवंबर से 03 फरवरी 2002 |
| वीरी पांडे | 04 फरवरी से 14 जुलाई 2002 (अतिरिक्त प्रभार) |
| एम. रामा जोइस | 15 जुलाई 2002 से 11 जून 2003 |
| वैरे मारवाह | 12 जून 2003 से 09 दिसंबर 2004 |
| सैद्ध दिल्लो रजी | 10 दिसंबर 2004 से 23 जुलाई 2009 |
| के. शक्रनारायण | 26 जुलाई 2009 से 21 जनवरी 2010 |
| एमआर एच फास्क | 22 जनवरी 2010 से 03 सितंबर 2011 |
| डॉ. चैनद महामद | 04 सितंबर 2011 से 17 मई 2015 |
| द्वापदी मुर्मू | 18 मई 2015 से 13 जुलाई 2021 |
| रमेश बैस | 14 जुलाई 2021 से अब तक |

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भाजपा के कद्दावर नेताओं में जुड़े रहे हैं।

2019 तक अधिकल भारतीय कॉर्य बोर्ड के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। शामिल सीपी राधाकृष्णन 16 साल की उम्र से आरएमएस और भ

संपादकीय

इसरो की कामयाबी

भा रत्नेश अंतर्रिक्ष अनुसंधान संगठन यानी इसरो ने एसएसएलवी-डी२ का सफल प्रैथमण करते हुए तीन उपग्रह पृथ्वी की कक्ष में पहुंचाये। उसकी यह कामयाबी के चलते बार-बार टरने के बाद इसे लॉन्च करने का पिछले अंगस्त में हुआ इसरो का प्रयास इस माने में नाकाम हो गया कि वह उपग्रहों को उस आर्किट में नहीं रख पाया, जहां रखना था। उस नाकामी ने स्थानिक ही इस सफलता की मिठाव बढ़ा दी है। दूसरी बात यह कि जो तीन सेटेलाइट भेजे गये हैं, उनमें से एक, आजादीसैट-२ का निर्माण स्पेसकिड-ज़ इंडिया के मार्गदर्शन में देश के विभिन्न हिस्सों की 750 छान्तों ने किया है। एयरोस्पेस स्टार्टअप स्पेसकिड-ज़ इंडिया का मक्सद इस प्रौजेक्ट के जरिए बच्चों में स्पैस को लेकर दिलचस्पी पैदा करना था, जिसका फायदा आने वाले दशकों में देखता है। यास बात कह कि स्पेसकिड-ज़ ने इस सेटेलाइट को एक्सपैडब्ल बनाया है। आर्किट में पहुंचने के बाद इसका बाहरी फ्रेम खुल जायेगा और यह पहले के मुकाबले चार गुना बढ़े आकार का हो जायेगा। छोटे सेटेलाइटों का अंतरिक्ष में लंबे समय तक टिके रहना मुश्किल इसलिए भी होता है कि वे अवश्यक एनर्जी हासिल नहीं कर पाते। आजादीसैट-२ की एसएसएलवल संरचना का फायदा यह है कि छोटे आकार के कारण इसे ले जाने में अंतरिक्ष खर्च नहीं पड़ता और आर्किट में पहुंचने के बाद इसकी बढ़ी हुई संरचना में लगा सोलर पैनल इसके लिए ऊर्जा पाने की जरिया बन जाता है। छोटे सेटेलाइट के साथ इस तरह का प्रयोग पहली बार ही किया गया है। तीसरी और चौथी बड़ी बात यह है कि इस सफल

माना जा रहा है कि 2026 तक ही इसका वैश्विक कारोबार बढ़कर 7.4 अरब डॉलर तक पहुंच जायेगा। इसरो की यह सामरिक पहल न केवल उसे इस मार्केट के बढ़े दिस्ते पर अपनी पकड़ बनाने का मौका दे सकती है, बल्कि देश की इकॉनॉमी के लिहाज से भी वरदान साधित हो सकती है।

अधियान के जरिए इसरो ने छोटे सेटेलाइटों के उपरते हुए बाजार में पैठ बनाने की कोशिश की है। इस प्रौजेक्ट को डिजाइन और डिवेलप करते हुए इस बाजार की जरूरतों का खास खाल रखा गया है। मक्सद यह स्थापित करना है कि इसरो मार्केट की मुताबिक सेटेलाइट लॉन्च करने की सुविधा प्रदान कर सकता है। ये रिकॉर्ट एक छोटी सी टीम के जरिए मात्र कुछ दिनों के अंदर असेंबल किये जा सकते हैं, जबकि प्रैसएसएल को मामले में 600 लोगों को भी छह महीने का वक्त लगता है। जानकारों के मुताबिक इसरो एक सकारात्मकी समय में वह सुविधा उपलब्ध कराने की स्थिति में होगा। ध्यान रहे, अंतरिक्ष में लोगों की और इंडस्ट्री की जिस तेजी से दिलासी बन रही है, उसके मद्देनजर इस क्षेत्र में विकास की जबरदस्त संभावना देखी जा रही है। माना जा रहा है कि 2026 तक ही इसका वैश्विक कारोबार बढ़कर 7.4 अरब डॉलर तक पहुंच जायेगा। इसरो की यह सामरिक पहल न केवल उसे इस मार्केट के बड़े दिस्ते पर अपनी पकड़ बनाने का मौका दे सकती है, बल्कि देश की इकॉनॉमी के लिहाज से भी वरदान साधित हो सकती है।

अभिमत आजाद सिपाही

हाल ही में आये भूकंप में तुर्की एवं सीरिया में भयंकर घस्स हुआ। हजारों लड़ी, पुरुष, बच्चे अकाल काल के ग्रास बने। उनकी दाढ़िया स्थिति, कष्ट एवं घेदना का उल्लेख करते हुए सद में प्रधानमंत्री मोदी का गला लंघ गया, आंखें नम हो गयीं। भारत उन प्रथम देशों में भी अग्रणी था, जिन्होंने तुर्की एवं सीरिया में भयंकर घस्स दुआ।

हमारा आदर्श भाई कहने का

तरुण विजय

किसी व्यक्ति या देश के संकटग्रस्त होने पर उसकी सहायता और सहयोग मानव धर्म है एवं इस कार्य का न तो किसी अनुग्रह के रूप में या प्रचार के लिए उपयोग अपेक्षित होता है। हाल ही में आये भूकंप में तुर्की एवं सीरिया में भयंकर घस्स दुआ। हजारों लड़ी, पुरुष, बच्चे अकाल काल के ग्रास बने। उनकी दाढ़िया स्थिति, कष्ट एवं घेदना का उल्लेख करते हुए सद में प्रधानमंत्री मोदी का गला लंघ गया, आंखें नम हो गयीं। भारत उन प्रथम देशों में भी अग्रणी था, जिन्होंने तुर्की और सीरिया की सहायता के लिए दवाएं, राहत सामग्री एवं आपदा में सहायता पहुंचाने वाले देवता स्वरूप आपदा प्रबंधन के बीच सैनिकों को भेजा। यह हमारा कर्तव्य था, हमारा धर्म था। हमारा आदर्श भाई कहने का है, जिस सिख महायोद्धा ने मुगलों से लड़ाये हुए शाम के बाद युद्ध थमा तो घायल मुस्लिम सैनिकों को भी पानी पिलाया था। किसी के दुख में दुश्मनी निकालना तो गिर्हों का काम होता है, मुख्यों का नहीं। विश्व के अनेक देशों ने भी सहायता भेजी। ट्रिवटर पर एक मुस्लिम विद्वान ने दवाई किया कि तुर्की के अंतरिक्षी के इस्लामी रखवै के बावजूद गैर मुस्लिम न जरूर एवं से तर्कीन विश्व की तथाकथित आजादी का विश्व किया हो, वे सभी मुद्दे अपनी जगह पर टिके रहेंगे, लेकिन मानवता के मानदंड पर इन मुद्दों का राहत कार्य से कोई संबंध नहीं है। यह विचारधारा बहुत बड़ी है और विश्व में भारत को अन्य सभी ईराई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीतिक तूफानों में तुर्की की बड़ी उपरिस्थिति रही है, जब तुर्की में खिलाफत खत्म हो रही थी और कमाल अतातुर्क के नेतृत्व में तुर्की की कठूलू के अंदर एसाई और मुस्लिम देशों से आगे प्रतिष्ठित करते हैं।

भारत में अनेक राजनीत

